Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for BA part 3, paper 5

Topic:–शेरशाह का राजपुताना अभियान

राजपूताना अभियान-शेरशाह के सामने सबसे बड़ी समस्या राजपूताना के विभिन्न राजपूत रिसायतों पर अधिकार करने की थी। राजपूताना में इस समय अनेक स्वतंत्र और शक्तिशाली शासक है। स्वतंत्र और शक्तिशाली शासक थे। उनसे अफगानों को किसी समय भी खतरा उत्पन्न हो सकता इनमें से कुछ राज्यों की हमदर्दी तो मुगलों के साथ भी थी। इन राज्यों में सबसे प्रमुख मालाड़ और मेवाड़ के शासक थे। अतः, शेरशाह ने एक सोची-समझी योजना के अंतर्गत इन राजपूत शासकों को परास्त करने का निश्चय किया।

शेरशाह ने सबसे पहले मारवाड़ के शासक मारवाड़ की तरफ अपना ध्यान दिया। राणा सांगा की मृत्यु के बाद राजस्थान में मारवाड़ के राज्य की शक्ति अत्यधिक बढ़ गई थी। अपने पिता की हत्या कर 1532 ई० में मालदेव मारवाड़ का शासक बना था। उसने कुछ ही वर्षों के अंदर अपनी शक्ति एवं राज्य की सीमा का काफी विस्तार कर लिया था। उसके प्रभाव में बीकानेर, जोधपुर और जयपुर के राज्य भी थे। उसकी विस्तारवादी एवं आक्रामक नीति अफगानों के लिए कभी भी खतरनाक बन सकती थी। मालदेव के राज्य की सीमा वस्तुतः अफगान राज्य की सीमा के निकट तक पहुँच गई थी। शेरशाह द्वारा मालदेव पर आक्रमण किए जाने के अन्य कारण भी थे। उसने शेरशाह के पुत्र कुतुब खाँ की युद्ध के अवसर पर सहायता नहीं की थी। फलतः, वह हुमायूँ के भाइयों के हाथों मारा गया था। इतना ही नहीं, उसने दुर्दिन में हुमायूँ की सहायता की एवं उसे अपने यहाँ शरण दी। इन सब कारणों से क्रुद्ध होकर शेरशाह ने मालदेव पर आक्रमण करने का निश्चय किया। इसी बीच शेरशाह को आक्रमण करने का एक बहाना भी मिल गया। राजस्थान के कुछ असंतुष्ट सामंतों एवं निष्कासित शासकों - जिनमें प्रमुख थे मेड़ता के राजा वीरमदेव और बीकानेर के राजा राव कल्याणमल के मंत्री नागराजने शेरशाह से मालदेव के विरुद्ध सहायता की माँग की। फलतः, 1544 ई० में शेरशाह मालदेव के विरुद्ध अभियान पर निकला।अजमेर के निकट दोनों सेनाएँ लंबे समय तक डटी रहीं। कोई भी पक्ष पहले आक्रमण नहीं करना चाहता था। शेरशाह के लिए प्रतीक्षा कठिन हो रही थी। इसलिए, उसने धोखा देकर एक जाली पत्र द्वारा मालदेव के सामंतों में फूट पैदा कर दी। मालदेव पर अपना विश्वास दिखाने के लिए उसके कुछ सामंतों ने मालदेव के मना करने पर भी शेरशाह पर आक्रमण कर दिया। वे वीरतापूर्वक अफगानों से लड़े, परंतु पराजित हुए। उनकी वीरता से प्रभावित होकर शेरशाह को स्वीकार करना पड़ा था, "मैंने एक मुट्ठी बाजरा के लिए दिल्ली का राज्य लगभग खो दिया था।" मालदेव को बाध्य होकर पीछे भागना पड़ा। शेरशाह ने एक-एक कर अजमेर, जोधपुर, नागौर, मेड़ता और अन्य सभी महत्त्वपूर्ण किलों एवं नगरों पर अधिकार कर लिया। मालदेव के

पास मारवाड़ के शक्तिशाली राज्य का एक छोटा और महत्त्वहीन भाग ही बच गया।मारवाड़ के पश्चात मेवाड़ की बारी आई। मेवाड़ की राजनीतिक स्थिति उस समय अत्यंत दुर्बल थी। आंतरिक संघर्षों एवं षड्यंत्रों ने अल्पवयस्क उदय सिंह को नाममात्र का शासक बना रखा था। शेरशाह ने इस स्थिति का लाभ उठाया। जोधपुर से वह मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ पहुँचा। राजपूत अफगानों का मुकाबला करने की स्थिति में नहीं थे। इसलिए, उन लोगों ने बिना युद्ध किए ही समर्पण कर दिया।शेरशाह ने राजपूत राज्यों के प्रति उदारतापूर्ण नीति अपनाई। उसने पराजित शासकों को अपदस्थ नहीं किया, बल्कि उनसे अपनी स्वामिभक्ति स्वीकार करवाकर उन्हें पुनः अपने राज्य में बना रहने दिया। उदाहरणस्वरूप मेड़ता और बीकानेर क्रमशः वीरमदेव और कल्याणमल को वापस सौंप दिए गए। इसके साथ-साथ मेवात को केंद्र बनाकर राजस्थान में अफगान शक्ति को स्थापना भी की गई; तथापि शेरशाह की इस नीति से अफगानों को कोई स्थायी लाभ नहीं हुआ। शेरशाह की मृत्यु के साथ ही मालदेव और अन्य राजपूत शासक इस क्षेत्र में पुनः सक्रिय हो उठे।